Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 प्रेम चन्द यादव
शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर
बी0एड्0 विभाग श्री गाँधी पी0जी0 कालेज,
मालटारी, आजमगढ़,उत्तर प्रदेश।

राजीव सिंह
शोधकर्त्ता, एम0ए0, एम0एड्0, नेट
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

सारांश– प्रस्तुत अध्ययन उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के (कला एवं विज्ञान वर्ग) तृतीय वर्ष में अध्ययनरत् समस्त छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु आवश्यक प्रदत्तों को प्राप्त करने के लिए रैन्डम न्यादर्शन विधि द्वारा स्नातक स्तर (कला एवं विज्ञान वर्ग) में अध्ययनरत् तृतीय वर्ष के 200 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के लिए चुना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संग्रहण के लिए दो प्रकार की मापनी का प्रयोग किया है–सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति मापनी– स्वनिर्मित प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आंकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सामाजिक चेतना होती है।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति कला वर्ग के छात्रों की अपेक्षा अधिक होता है।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति समान होता है।

मुख्य शब्द– उच्च शिक्षा, छात्र एवं छात्राएँ, सामाजिक चेतना, अभिवृत्ति, तुलना।

भूमिका. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है और धीरे–धीरे समाज में बड़ा होकर सामाजिक नियमों को ग्रहण करके वह समाज का सदस्य बन जाता है। समाज में वह प्रेम, मिठास, ईर्ष्या, द्वेष, सुख–दुख का अनुभव करता है। समाज में उसे इन समस्याओं से इतर भी अन्य अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा इसके अतिरिक्त मनुष्य सामाजिक अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं से गुजरते हुए अपने भावी भविष्य के तरफ तत्परता से आगे बढ़ता जाता है। इस संसार में जो व्यक्ति अपने आप को सुख–दुःख में सामान्य रूप से स्थापित कर लेता है वही सच्चा व सफल व्यक्ति माना जाता है।

वर्तमान युग संघर्ष का युग है। जिधर भी हम दृष्टिपात करते हैं उधर समस्या ही समस्या नजर आती है। साथ ही बढ़ती धार्मिक सामाजिक जटिलताओं और साम्प्रदायिकता ने मानव जीवन को दुष्कर बना दिया है।

हमारे देश में अनेक समस्याओं का स्वरूप सामने उभर कर आया है। जैसे–भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, छुआछूत, क्षेत्रवाद और साम्प्रदायिकता आदि। जिससे देश को अनेक प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। वहीं दूसरी ओर देश को विदेशी कर्ज, सीमा सुरक्षा आदि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ये सभी समस्यायें हमारे देश के विकास में बाधा उत्पन्न कर रही है। इन सभी समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या साम्प्रदायिक समस्या है। आज हम कुछ विद्यालयों को छोड़कर यह कह सकते हैं कि देश के विभिन्न विद्यालयों में छात्रों, अध्यापकों तथा कर्मचारियों में अपने जाति को श्रेष्ठ मानने और अन्य धर्म जाति के विरूद्ध विपरीत भावना का विकास हुआ है। जिससे उनमें धर्मविरोधी, साम्प्रदाय विरोधी एवं जातिविरोधी वातावरण उत्पन्न हो रहा है।

मनुष्य जब जन्म लेता है तो वह अपने सामने एक अदभुत वातावरण पाता है और विकास की प्रक्रिया की ओर अग्रसर होता है। मनोविज्ञान के अनुसार मानव के विकास में जितना आनुवांशिकता का योगदान होता है। उतना ही योगदान विकास में वातावरण का होता है क्योंकि मनुष्य जब जन्म लेता है और वह वातावरण के सम्पर्क में आता है तो वह विकास के साथ–साथ अपने आस–पास के वातावरण से बहुत कुछ सीखता है। मनुष्य जब जन्म लेता है तो न हीं उसकी कोई जाति होती है और न ही उनका कोई धर्म होता है जाति तथा धर्म का तमगा उसे परिवार तथा समाज द्वारा प्रदान किया जा सकता है। बालक शैशवावस्था से ही समाज तथा अपने परिवेश से अनेक आदतों को सीखता है। जो उसकी आदतों तथा विचारों में परिवर्तित हो जाती है। शैशवावस्था के बाद बालक बाल्यावस्था में प्रवेश करता है। तथा वह घर से विद्यालय की तरफ अग्रसर होकर समाज के पूर्ण सम्पर्क में आता है तथा समाज के द्वारा बनाये नियमों तथा विचारों का सामना करता है। बाल्यावस्था के बाद एक सबसे कठिन अवस्था का आगमन होता है, वह अवस्था किशोरावस्था है यह अवस्था अत्यंत संवेदनशील होती है। इस अवस्था में बालक को जैसा समाज मिलता है वह उसी धारा की तरफ मुड़ जाता है। इस अवस्था में बालक समाज के प्रति ज्यादा संवेदनशील होता है इस अवस्था के बाद बालक तथा बालिकाओं में सबसे उमंग की अवस्था का आगमन होता है जिसे युवावस्था कहते हैं अतः स्नातक स्तर पर आते–आते बालक पूर्ण रूप से समाज तथा धर्म के प्रति जागरूक हो जाता है अतः इस अवस्था में अधिक सामाजिक एवं धार्मिक होने के कारण इन नवयुवकों का उनके समाज के प्रति दृष्टिकोण तथा धार्मिक प्रवृत्ति का अंकन किया जाये जिससे यह पता चले कि उनकी क्या मनोदशा है तथा उनका दृष्टिकोण सकारात्मक है या नकारात्मक जिसके आधार पर शिक्षक उनके बारे में जान सके तथा उन्हें सही दिशा–निर्देश द्वारा सही पथ पर अग्रसारित कर एक अच्छा नागरिक बना सके और वे एक अच्छे नागरिक का कर्तव्य निभाते हुए देश के विकास में सहयोग कर सके।

महान युनानी दार्शनिक अरस्तु ने कहा है कि– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में रहकर ही उसका विकास हो सकता है यदि कोई व्यक्ति ऐसा है जो समाज में नहीं रह सकता है या जिसे समाज की आवश्यकता ही न हो वह या तो देवता हो सकता है या तो जंगली जानवर। मनुष्य एवं समाज एक दूसरे के पूरक हैं। समाज में रह कर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है तथा समाज के मूल्यों, नियमों तथा प्रतिबन्ध द्वारा नियंत्रित होता

है। सामाजिक भागीदारी एवं समस्याओं के प्रति ज्ञान रखने को ही सामाजिक जागरूकता कहा जाता है।

मैकाइवर एवं पेज– सामाजिक चेतना क्या है? इसके संदर्भ में अपनी पुस्तक **'SOCIOLOGY'** में परिभाषा देते हुए लिखा है– ''सामाजिक जागरूकता एवं चेतना से तात्पर्य सामाजिक घटनाओं एवं सामाजिक समस्याओं के बारे में ज्ञान रखना है।''

एम0एस0 श्रीनिवास– सामाजिक चेतना को परिभाषित करते हुए इन्होंने लिखा है कि– ''सामाजिक जागरूकता न सिर्फ सामाजिक मूल्यों का ज्ञान है अपितु सामाजिक कार्यों में भागीदारी भी है।''

एटकिन्सन, स्मिथ एवं हिलगार्ड (1989)– ने चेतना की एक वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय परिभाषा दी है '' हम लोग जब चेतना में होते हैं तो बाह्य एवं आन्तरिक घटनाओं से अवगत होते हैं, अपने गत अनुभूतियों को प्रतिबिम्बित करते हैं, समस्या–समाधान में सम्मिलित होते है, किसी नये उद्दीपकों पर ध्यान न देकर विशेष उद्दीपकों पर ही ध्यान देने में वरणशील होते हैं तथा किसी व्यक्तिगत लक्ष्य एवं पर्यावरणीय आवश्यकताओं के प्रति जानबूझकर अनुक्रिया का चयन करते हैं एवं उसे कार्यान्वित करते हैं।''

अर्थात् सामाजिक चेतना देश तथा काल के प्रति सजग होना है। प्रायः यह भावना सब लोगों में नहीं पायी जाती है, इसलिए संचार माध्यमों से नागरिकों को विभिन्न सूचनाओं से परिचित कराया जाता है और इसी को सामाजिक क्रान्ति, गतिशीलता एवं परिवर्तन में देखा जा सकता है।

समस्या कथन–

''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के (कला एवं विज्ञान वर्ग) तृतीय वर्ष में अध्ययनरत् समस्त छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन हेतु आवश्यक प्रदत्तों को प्राप्त करने के लिए रैन्डम न्यादर्शन विधि द्वारा स्नातक स्तर (कला एवं विज्ञान वर्ग) में अध्ययनरत् तृतीय वर्ष के 200 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के लिए चुना गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संग्रहण के लिए दो प्रकार की मापनी का प्रयोग किया है –

सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति मापनी– स्वनिर्मित

प्रयुक्त सांख्यिकीय

प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आंकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन

सारणी सं0 1

कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t–अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग के विद्यार्थी	100	26.91	5.17	1.77	2.15	1.97 df=198
2.	विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	100	28.68	6.39			
निष्कर्ष– $H_0 : \mu_1 - \mu_2 = 0$ सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत; $H_1 : \mu_1 - \mu_2 \neq 0$ सार्थकता स्तर पर स्वीकृत							

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 26.91 एवं मानक विचलन 5.17 है तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 28.68 एवं मानक विचलन 6.39 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 2.15 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.97 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।''* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नही होता है।''* अस्वीकृत की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सामाजिक चेतना होती है।

2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन

सारणी सं0 2

कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t–अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग के छात्र	50	26.54	3.77	2.22	2.72	1.98 df=98
2.	विज्ञान वर्ग के छात्र	50	28.76	4.35			

निष्कर्ष–

$H_0 : \mu_1 - \mu_2 = 0$ सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत

$H_1 : \mu_1 - \mu_2 \neq 0$ सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 26.54 एवं मानक विचलन 3.77 है तथा विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 28.76 एवं मानक विचलन 4.35 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 2.72 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।''* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नही होता है।''* अस्वीकृत की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति कला वर्ग के छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

3. **उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन**

सारणी सं0 3

कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t–अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग की छात्राएँ	50	27.28	3.51	1.30	0.826	1.98 df=98
2.	विज्ञान वर्ग की छात्राएँ	50	28.58	4.67			

निष्कर्ष–

$H_0 : \mu_1 - \mu_2 = 0$ सार्थकता स्तर पर स्वीकृत

$H_1 : \mu_1 - \mu_2 \neq 0$ सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 27.28 एवं मानक विचलन 3.51 है तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 28.58 एवं मानक विचलन 4.67 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 0.826 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।''* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नही होता है।''* स्वीकृत की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सामाजिक चेतना होती है।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति कला वर्ग के छात्रों की अपेक्षा अधिक होता है।

3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति समान होता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति में सामाजिक चेतना का होना अति महत्वपूर्ण व अनिवार्य हो जाता है ताकि समाज में उसके जीवन सम्बन्धित सभी कार्यों को व्यवस्थित व आसान बनाया जा सके। सामाजिक चेतना का मतलब न सिर्फ व्यक्ति के अपने व्यक्तिगत जीवन में जागरूकता होता है बल्कि मानव जाति या समाज के प्रति भी सामाजिक जागरूकता का महत्व होता है। सामाजिक चेतना व्यक्ति को प्राणीशास्त्रीय अर्थात् जैविक रूप से प्राप्त नहीं होता बल्कि उसे यह समाज में स्वयं चेतन रूप में प्राप्त करना होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आलम, मो0 महमूद (2016). सोशल एडजेस्टमेन्ट एण्ड सोशल मैच्युरिटी एस प्रेडिकेटर्स ऑफ ऐकेडमी एचिवमेन्ट एमंग एडोलसेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इन्फार्मेटिव एण्ड फ्चूरिस्टिक रिसर्च, वाल्यूम–3, इश्शू–12, पृ0 4495–4507
- अस्थाना, अंजू (1991). ए स्टडी ऑफ सोशल मेच्योरिटी एमांग स्कूलिंग चिल्ड्रेन इन द सिटी ऑफ लखनऊ, पी–एच.डी. शिक्षाशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय।
- कुमार, दिनेश एवं रीतू (2013). सोशल मैच्युरिटी ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर पर्सनालिटी, एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडिमेशनल रिसर्च, वाल्यूम–2, इश्शू–8, पृ0 14–25, www.tarj.in
- कुन्दू, मौमिता एवं अन्य (2015). एडजेस्टमेन्ट ऑफ अण्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर सोशल इंटेलीजेन्स, *अमेरिकन जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च*, वाल्यूम–3, नं0 11, पृ0 1398–1401
- किन्स गिलमैन्स (2007). नैतिक और सामाजिक चेतना के विभिन्न पक्षों का मेटा एनालिसिस, अतिरिक्तांक, प्रतियोगिता दर्पण–(2011) हिन्दी मासिक राष्ट्रीय पत्रिका उपकार प्रकाशन, आगरा पृ0सं0 101
- चन्नावार एवं खान, तरन्नूम (2018). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य वर्ग और वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन, *आयुषी इण्टरनेशनल इण्टरडिस्पिलनरी रिसर्च जर्नल*, वॉ0 5, इश्शू–4, पृ0 381–383